नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आरबीआई ; डिजिटल सुरक्षा की नई व्यवस्था

भारत में डिजिटल क्रांति ने आम नागरिक के जीवन को अभूतपूर्व सुविधा दी है. आज बैंकिंग, खरीदारी, बिल भुगतान और सरकारी सेवाओं से लेकर छोटे व्यापार तक लगभग हर गतिविधि मोबाइल और इंटरनेट आधारित हो चुकी है. डिजिटल इंडिया की यह सफलता जितनी तेज रही है, उतनी ही तेजी से साइबर अपराध भी बढ़े हैं. पिछले कुछ वर्षों में ऑनलाइन ठगी, फर्जी कॉल, सिम स्वैपिंग और बैंक खातों से धन निकासी की घटनाओं ने आम लोगों की चिंता बढ़ाई है. यही कारण है कि भारतीय रिजर्व बैंक अब केवल ओटीपी आधारित सुरक्षा व्यवस्था से आगे बढ़कर मल्टी फैक्टर ऑथेंटिकेशन की दिशा में कदम उठा रहा है.

लंबे समय तक ओटीपी यानी वन टाइम पासवर्ड को डिजिटल सुरक्षा की सबसे मजबूत दीवार माना गया. लोगों को यह समझाया गया कि किसी भी स्थिति में अपना ओटीपी साझा न करें. लेकिन व्यवहार में यही प्रणाली साइबर अपराधियों के लिए सबसे आसान हथियार बन गई. ठग खुद को बैंक अधिकारी, सरकारी एजेंसी या ग्राहक सेवा प्रतिनिधि बताकर लोगों से ओटीपी हासिल कर लेते हैं. कई मामलों में सिम स्वैपिंग जैसी तकनीक के जरिए अपराधी मोबाइल नंबर का नियंत्रण हासिल कर बैंक खातों तक पहुंच बना लेते हैं. इससे यह स्पष्ट हुआ कि केवल ओटीपी आधारित सुरक्षा अब पर्याप्त नहीं रह गई है. इसी चुनौती को ध्यान में रखते हुए आरबीआइ ने मल्टी फैक्टर ऑथेंटिकेशन की नई व्यवस्था लागू करने की दिशा में पहल की है. अब डिजिटल भुगतान के लिए केवल पासवर्ड या ओटीपी पर निर्भरता कम होगी. इसके साथ फिंगरप्रिंट, चेहरे की पहचान और डिवाइस आधारित प्रमाणीकरण जैसे अतिरिक्त सुरक्षा उपाय भी जरूरी होंगे. इसे डायनामिक ऑथेंटिकेशन कहा जा रहा है, जिसमें प्रत्येक ट्रांजेक्शन के लिए अलग डिजिटल टोकन तैयार होगा और उसका दोबारा उपयोग संभव नहीं होगा. इससे साइबर ठगी की आशंका काफी हद तक कम की जा सकती है.

इसके साथ ही रिस्क बेस्ड ऑथेंटिकेशन प्रणाली भी महत्वपूर्ण साबित हो सकती है. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से उपयोगकर्ता की लोकेशन, व्यवहार और खर्च के पैटर्न का विश्लेषण किया जाएगा. यदि कोई लेन-देन असामान्य पाया जाता है तो अतिरिक्त सुरक्षा जांच की जाएगी. यह व्यवस्था डिजिटल बैंकिंग को अधिक सुरक्षित और भरोसेमंद बना सकती है. हालांकि तकनीक चाहे जितनी उन्नत हो जाए, मानवीय सतर्कता का कोई विकल्प नहीं हो सकता.आजकल अधिकांश साइबर अपराध तकनीकी कमजोरी से अधिक मानवीय भूल का फायदा उठाकर किए जाते हैं. सोशल इंजीनियरिंग के जरिए अपराधी लोगों को मानसिक दबाव में लेकर निजी जानकारी हासिल कर लेते हैं. इसलिए नागरिकों को यह समझना होगा कि कोई भी बैंक फोन पर ओटीपी, पासवर्ड या कार्ड विवरण नहीं मांगता. स्क्रीन शेयरिंग ऐप डाउनलोड करने से भी बचना चाहिए, क्योंकि इससे मोबाइल और बैंकिंग डेटा पूरी तरह अपराधियों के नियंत्रण में जा सकता है.

हालांकि सरकार और वित्तीय संस्थानों की जिम्मेदारी भी कम नहीं है.दरअसल, साइबर हेल्पलाइन 1930 को और प्रभावी बनाना होगा ताकि फ्रॉड के शुरुआती 'गोल्डन आवर' में कार्रवाई कर पीड़ितों का पैसा बचाया जा सके. बैंकों की जवाबदेही तय होनी चाहिए और सुरक्षा खामी मिलने पर ग्राहकों को समयबद्ध मुआवजा मिलना चाहिए. डिजिटल इंडिया का सपना तभी पूरा होगा जब नागरिक डिजिटल लेन-देन को सुरक्षित महसूस करेंगे. आरबीआइ की नई पहल इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण और समयानुकूल कदम है.

दिल्ली डायरी

केरल में क्षत्रपों के द्वंद्व के कारण कांग्रेस हाईकमान किंकर्तव्यविमूढ़

प्रवेश कुमार मिश्र

केरल विधानसभा चुनाव में बहुत हासिल करने के बाद भी कांग्रेसी रणनीतिकार मुख्यमंत्री के नाम पर एक राय बनाकर निर्णय करने में असमर्थ दिखाई दे रहे हैं. कांग्रेस के अंदर इस तरह के अनिश्चिततापूर्ण निर्णय को लेकर दूसरे दलों व समूहों की ओर से चौतरफा राजनीतिक हमला किया जा रहा है. चर्चा है कि कांग्रेस अपने तीन क्षत्रपों के द्वंद्व के कारण अंतर्द्वंद्व व ऊहापोह की स्थिति में फंसी हुई है.

एक क्षत्रप पार्टी के शीर्ष नेता राहुल गांधी के सबसे विश्वासपात्र हैं तो दूसरे गठबंधन सहयोगियों के पसंदीदा हैं . तीसरे क्षत्रप अपने अनुभव व वरिष्ठता को आधार बनाकर चुपचाप अपनी गोटी सेट करने के फिराक में हैं. हालांकि पिछले दिनों केरल में चले आंतरिक पोस्टरवार से पार्टी को हास्यास्पद स्थिति में आना पड़ गया था लेकिन कांग्रेस केन्द्रीय नेतृत्व के सख्त निर्देश के बाद फिलहाल पोस्टर युद्ध सुस्त पड़ा है परन्तु अभी भी शीतयुद्ध जारी है. पार्टी नेतृत्व के इस हालात से वरिष्ठ कांग्रेसी नेता भी हैरत में हैं.

इंडिया गठबंधन का पुनर्गठन या पूर्णविराम

पांच राज्यों के चुनाव परिणाम के बाद की राजनीति परिस्थितियों को आधार बनाकर इन दिनों सबसे ज्यादा चर्चा इंडिया गठबंधन के अस्तित्व व भविष्य को लेकर हो रही है. तमिलनाडु में कांग्रेसी रूख से नाराज़ इंडिया गठबंधन के सबसे विश्वासपात्र साथी डीएमके ने जिस तरह से गठबंधन से अलग होने की घोषणा की है उससे इसके भविष्य का आंकलन किया जा सकता है.

इतना ही नहीं पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की टीएमसी द्वारा जिस तरह चुप्पी साधी गई है और सपा नेतृत्व द्वारा ममता के साथ हमदर्दी दिखाई गई है उससे साफ है कि केन्द्रीय राजनीति में कुछ उलटफेर दिखेगा. हालांकि राजद, शिवसेना (उद्धव), एनसीपी (शरद), जेएमएम द्वारा केन्द्रीय स्तर पर सुलह के साथ इंडिया गठबंधन के पुनर्गठन की योजना बनाई जा रही है लेकिन कुछ लोग इंडिया गठबंधन के भविष्य को अब इसे पूर्णविराम के रूप में देखने लगे हैं.

मिशन उत्तर प्रदेश में जुटे भाजपाई

पांच राज्यों के चुनाव परिणाम के बाद उत्तर प्रदेश सरकार में हुए मंत्रिमंडल विस्तार को 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव की तैयारी से जोड़कर देखा जा रहा है. दिल्ली की राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि भाजपाई अब मिशन उत्तर प्रदेश को लेकर आगे बढ़ रहे हैं. क्योंकि केन्द्रीय मंत्रिमंडल के संभावित फेरबदल में भी उत्तरप्रदेश के जातीय व क्षेत्रीय समीकरण को ध्यान में रखकर कुछ नए लोगों को मंत्रिमंडल में शामिल किया जाएगा. इतना ही नहीं पार्टी अध्यक्ष नितिन नवीन की नई टीम में भी उत्तरप्रदेश के नेताओं को विशेष महत्व के साथ शामिल करने की भी चर्चा हो रही है.

मोदी की अपील से उलझने बढ़ी

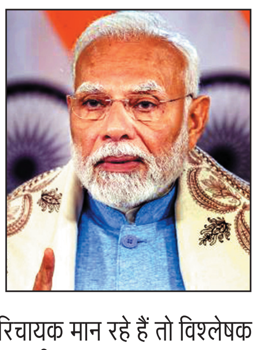

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अति व्यय पर नियंत्रण करने की अपील के संदर्भ को लेकर लोग उलझन में पड़ गए हैं . कुछ लोग इसे भविष्य में आने वाले आर्थिक संकट की चेतावनी के रूप में देख रहे हैं तो कुछ लोग इसे हालात का अंदाजा लगाने में देर कर चुकी सरकार द्वारा हड़बड़ी में उठाए गए कदम का परिचायक मान रहे हैं . मोदी के अपील के बाद न सिर्फ शेयर बाजार बल्कि सामान्य मंडियों में भी हलचल बढ़ी हुई है . सरकार के लोग भले ही इस अपील से होने वाले फायदों का पूरा अंकगणितीय ब्योरा देते हुए समय पर उठाया गया बेहतर कदम बता रहे हैं लेकिन विपक्षी दलों व राजनीतिक विश्लेषक के निशाने पर सरकार है . विपक्षी इसे सरकार की कमजोरी का परिचायक मान रहे हैं तो विश्लेषक इस अपील के कारण समाज व रोजमर्रा के जीवन पर पड़ने वाले बहुस्तरीय प्रभाव का आंकलन कर नीतिगत फैसलों पर दोष मढ़ रहे हैं . कोरोना काल से तुलना करने के कारण आर्थिक हालात को ध्यान में रखते हुए हलचलें बढ़ी हुई है .

चिंतन शिविर

भारत में खेलों के भविष्य को दिशा देना

पुलेला गोपीचंद

> चिंतन शिविर कई मायनों में एक अनूठा प्रयोग है, लेकिन यह पहले से ही सफल साबित हो रहा है . यह संवाद, समन्वय और आपसी समझ के महत्व को दर्शाता है . भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिए, ऐसे मंच न केवल लाभकारी हैं, बल्कि आवश्यक भी हैं .अगर हम वैश्विक खेल मंच पर अपनी महत्वाकांक्षाओं को सही मायने में साकार करना चाहते हैं, तो इन संवादों का जारी रहना और इन्हें सामूहिक कार्रवाई से मदद मिलना भी जरुरी है . श्रीनगर खेल संकल्प हमें वह दिशा प्रदान करता है . चिंतन शिविर हमें वह मंच प्रदान करता है . ये दोनों मिलकर भारत को अपनी खेल संबंधी आकांक्षाओं को स्थायी ओलंपिक सफलता में बदलने के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करते हैं .

दो चिंतन शिविरों का हिस्सा बनने का अवसर प्राप्त करने के बाद, मैं भरोसे के साथ कह सकता हूँ कि यह आज भारतीय खेल जगत की सबसे सामयिक और असरदार पहलों में से एक है. हम अपने राष्ट्र की खेल यात्रा के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर हैं, एक ऐसा मोड़ जहाँ इरादा, निवेश और प्रेरणा अभूतपूर्व रूप से एक साथ मिल रहे हैं.

पिछले एक दशक में, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, भारत में खेल हाशिये से मुख्यधारा में आ गया है. इसके महत्व के प्रति भी साफ तौर पर राष्ट्रीय जागरूकता देखी जा सकती है, न केवल एक प्रतिस्पर्धी गतिविधि के रूप में, बल्कि स्वास्थ्य, अनुशासन और राष्ट्रीय गौरव के साधन के रूप में भी. आज, हम एक विशाल और विविध तंत्र देख रहे हैं, जहां राज्य सरकारें, गैर-सरकारी संगठन, निगम, संघ और ज़मीनी स्तर के संस्थान सभी मिलकर खेलों के विकास में सक्रिय रूप से योगदान दे रहे हैं.चिंतन शिविर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह सभी हितधारकों को एक साझा मंच पर लाता है.खेल अपने आप में कई क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है, जिनमें विनिर्माण, मनोरंजन, फिटनेस, मीडिया और शिक्षा शामिल हैं. यह शिविर इन सभी क्षेत्रों को एक साथ लाने में मदद करता है, जिससे एक साझा दृष्टिकोण बनता है, जो दीर्घकालिक सफलता के लिए बेहद जरुरी है.

यह देश के सामूहिक दृष्टिकोण को सामने लाता है और साथ ही विभिन्न राज्यों की सर्वोत्तम प्रथाओं को प्रदर्शित करता है, जिससे अनुकरण और नवाचार को भी प्रोत्साहन मिलता है.चिंतन शिविर महज एक सम्मेलन से कहीं बढ़कर, एक शिक्षण तंत्र है। यह इसमें शामिल होने वाले लोगों को विचारों का आदान-प्रदान करने, चुनौतियों को समझने और मिलकर समाधान विकसित करने का अवसर देता है. यह एक शक्तिशाली प्रेरक के रूप में भी काम करता है, सफलता की तमाम कहानियों को सामने लाता है और इस विचार को और पुख्ता करता है कि भारत में खेल महज़ विशिष्ट पदकों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भागीदारी, समावेशिता और राष्ट्र निर्माण भी शामिल है. फिट इंडिया मूवमेंट जैसी पहल, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन और साइक्लिंग प्रतियोगिताओं जैसी सामुदायिक गतिविधियों ने खेल के प्रति हमारे नजरिए को नया रूप दिया है. आज के वक्त में जोर सभी के लिए खेल के साथ-साथ, उच्चतम स्तर पर उत्कृष्टता पर है. पदक जीतने की आकांक्षाएं और व्यापक भागीदारी अब अलग-अलग मुद्दे नहीं हैं, बल्कि वे एक ही प्रक्रिया का हिस्सा हैं.

श्रीनगर में शिविर का आयोजन करने से इसका महत्व और भी बढ़ गया है. इस शहर की शांत सुंदरता न केवल खेलों की विचारधारा के लिए एक मनोरम पृष्ठभूमि प्रदान करती है, बल्कि शांत चिंतन का भाव भी देती है, जो सार्थक संवाद के लिए बेहद ज़रुरी है. इस चिंतन शिविर का एक अहम केंद्र बिंदु श्रीनगर खेल संकल्प को अपनाना था। यह संकल्प महज एक आशय का दस्तावेज नहीं,बल्कि यह एक एकीकृत ढांचा है, जो भारतीय खेल जगत के सभी हितधारकों की आकांक्षाओं को एक साथ बांधता है. साझा लक्ष्यों, प्राथमिकताओं और जिम्मेदारियों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करके, यह एक ऐसा रोडमैप तैयार करता है, जो विखंडन के बजाय सहयोग को प्रोत्साहित करता है. श्रीनगर खेल संकल्प की असली ताकत विभिन्न भागीदारों— सरकारों, संघों, निजी क्षेत्र और नागरिक समाजको एक मंच पर लाने की क्षमता में निहित है.

यह इस विचारधारा को और पुख्ता करता है कि भारत के खेल जगत का उत्थान अलग-थलग प्रयासों से नहीं हो सकता.इसके बजाय, इसे एक समन्वित, सहयोगात्मक दृष्टिकोण से संचालित किया जाना चाहिए, जहां संसाधनों, ज्ञान और विशेषज्ञता को एक साथ लाया जाए.भारत को 2036 तक ओलंपिक खेलों में शीर्ष 10 देशों में शामिल होने की अपनी दीर्घकालिक महत्वाकांक्षा को प्राप्त करने के लिए यह समन्वय बेहद महत्वपूर्ण है. विश्व स्तरीय एथलीट तैयार करने के लिए न केवल प्रतिभा की जरुरत होती है, बल्कि एक सुचारू तंत्र की भी आवश्यकता होती है, जिसमें जमीनी स्तर पर पहचान, वैज्ञानिक प्रशिक्षण, बुनियादी ढांचा, उत्कृष्ट कोचिंग, प्रतिस्पर्धा का अनुभव और निरंतर वित्तीय एवं संस्थागत समर्थन शामिल हैं.संकल्प वही रणनीतिक कड़ी है, जो इन सभी तत्वों को एक सुसंगत प्रणाली में जोड़ सकता है.

(लेखक भारतीय राष्ट्रीय बैडमिंटन टीम के मुख्य राष्ट्रीय कोच हैं)

क्या एकजुट हो पाएगा विपक्षी गठबंधन ?

कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष के इंडिया गठबंधन के सामने विधानसभा चुनाव के नतीजों ने गंभीर चुनौती पेश की है . यदि तमिलनाडु में कांग्रेस विजय की सरकार में शामिल हुई तो उसे लोकसभा में डीएमके के 22 तथा राज्यसभा में 8 सदस्यों का समर्थन कैसे मिलेगा ? तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री व डीएमके नेता एम . के . स्टालिन कांग्रेस के रवैये से बेहद नाराज हैं . सत्ता में सहभागी होने के लिए कांग्रेस ने विजय की पार्टी टीवीके को समर्थन दिया . तमिलनाडु में कांग्रेस का डीएमके के साथ इंदिरा गांधी के समय से पुराना गठबंधन रहा है लेकिन अब राहुल गांधी टीवीके नेता विजय के मित्र बन गए हैं . प . बंगाल में टीएमसी की पराजय से देश में विपक्ष को जबरदस्त झटका लगा है . ममता बनर्जी ने बीजेपी से अपना संघर्ष जारी रखने की घोषणा की है . राहुल गांधी ने उन्हें समर्थन देते हुए वोट चोरी का आरोप लगाया है . सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने भी ममता को साथ देने का वादा किया है . जहां तक कांग्रेस की भूमिका है, वह पूरे मन से ममता के साथ नहीं थी . कांग्रेस नेताओं की वामपंथियों से भी मिलीभगत थी . इसलिए ममता ने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया था . टीएमसी हो या आम आदमी पार्टी, कोई भी राहुल को अपना नेता स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं . 'आप' की तो पहले से कांग्रेस से खटक गई थी . स्टालिन और ममता की चुनावी हार के बाद विपक्ष का आधार बेहद कमजोर हो गया है . 2029 में होने वाले आम चुनाव के पहले कई राज्यों में चुनाव होंगे जिसमें गोवा, मेघालय, मणिपुर, उत्तराखंड, यूपी, गुजरात, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश व राजस्थान का समावेश है . अभी बीजेपी अधिकांश राज्यों में सत्तारूढ़ है . कांग्रेस की सिर्फ तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश व कर्नाटक में सरकार है . विपक्षी गठबंधन के नेता व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा परे रखकर एकजुटता दिखाएं तभी बीजेपी को चुनौती दे पाएंगे .

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

तमिलनाडु सीएम का नया ड्रामा विजय क्यों बन रहे हैं मामा !

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, तमिलनाडु के नए मुख्यमंत्री थलापति विजय ने अपने पहले संबोधन में खुद को राज्य के युवाओं का मामा बताया. इस पर आपकी क्या राय है ?'

हमने कहा, 'संस्कृत में मामा को 'मातुल' कहते हैं. यह बड़ा प्रेमपूर्ण या वात्सल्य भरा रिश्ता है. बच्चे गर्मी की छुट्टियों में मामा के घर जाते हैं. मां में एक बार 'म' अक्षर आता है तो मामा में 2 बार! महाराष्ट्र में आपको 'मामासाहेब' कहलाने वाले कितने ही लोग मिल जाएंगे. मामा वरेरकर नामक मराठी साहित्यकार का नाम आपने सुना होगा. राजकपूर और महमूद की पुरानी फिल्म परवरिश का गाना था मामा ओ मामा, घरवाले खाएं चक्कर, ऐसा है अपना चक्कर, चक्कर में तुम नहीं आना प्यारे मामा ! बचपन में आपने चंदामामा मैगजीन पढ़ी होगी जो मराठी में 'चांदोबा' नाम से निकलती थी. आपने वह बालगीत भी सुना होगा - चंदा मामा दूर के, पुए पकाएं बूर के, आप खाएं थाली में, मुन्ने को दें प्याली में !'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मामा का रिश्ता कभी-कभी खतरनाक भी होता है. कंस मामा ने अपने भांजे कृष्ण को मारने के कितने उपाय किए थे लेकिन अंत में 10,000 हाथियों के बल वाला कंस खुद ही मारा गया. महाभारत में कौरवों के मामा शकुनि का छल-कपट कौन नहीं जानता ! नकुल-सहदेव के मामा मद्र नरेश शल्य कौरवों की ओर से युद्ध में उतरे थे. वह कर्ण के सारथी बने थे और उसे यह कहकर हतोत्साहित करते रहते थे कि अर्जुन के मुकाबले तुम कुछ भी नहीं हो.'

हमने कहा, 'आपको मालूम ही होगा कि मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान 'मामा' कहलाते थे जिन्होंने लाड़ली बहन योजना शुरू की थी और प्रदेश की सभी 29 सीटों पर बीजेपी को निर्वाचित कराने में सफल हुए थे. ऐसे लोकप्रिय मामा को प्रधानमंत्री मोदी ने तुरंत दिल्ली बुलवाकर केंद्रीय कृषि मंत्री बना दिया. उनकी जगह मध्य प्रदेश में मोहन यादव की मुरलिया बजने लगी. मध्य प्रदेश के भेड़ाघाट में यदि नर्मदा नदी में नाव डगमगाने लगी तो मांझी पूछता है कि नाव में एक साथ मामा-भांजे तो सवार नहीं हैं ? एक अंधविश्वास के तहत मामा-भांजे का एक साथ नाव में बैठना या सफर करना उचित नहीं माना जाता.'

शब्द-सागर : डॉ . सागर खादीवाला

CROSS WORD 12256

- डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे

1. दक्षिण भारत के रामेश्वरम् नामक स्थान में स्थापित एक शिवलिंग (सं.) 2. पानी, नीर 3. आसरा, आश्रय, भरोसा, सहायता 4. मरण, मृत्यु 6. लक्ष्मी (सं.) 7. तौल, भार, बोझ 8. वह स्थान जहां विचार होने तक अभियुक्त को पहरे में रखा जाता है 9. गूंगा, अवाक (सं.) 11 काम में लाना या लगाना, तंग करना, समाप्त करना 13. महिमा, गुरुता, बड़प्पन (सं.) 16. जड़ से, मूल सहित 17. भाग्य, किस्मत 18. आग, अग्नि (सं.) 19. चाल, गति

बाएं से दाएं

1.वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुलोत्पन्न हो 4. खामोश, चुप (सं.), 5. मिलाप, सुलह, एकता 6. लोकोक्ति, भसल, 8. एक-दूसरे का रहस्य या गुप्त बात जानने वाला 10. रक्षक, चौकीदार, पहरेदार 12. लवण, लावण्य 14. वायु में मिले जलकण जो ठंडक के कारण सफेद तह के रूप में धरती पर जम जाते हैं, कबड्डी के खेल में दो दलों के बीच की रेखा 15. किसलिए ? किस वास्ते ? 16. अनादि काल, बहुत दिन से चली आई परंपरा (सं.) 18. इत्र बेचने वाला 20. सिलाई के टांके 21. ऊपर तक या किनारे तक भरा हुआ 22. रेखा, धारी

Solution 12255

म	हा	मं	ड	ल		आ	वं
हा	ल	त			अ	ज्ञा	त
र		व्य	व	धा	न		र
त	र		स	क	ल		स
	क्त		ज			सु	
शा	पि	त		श	मा	दा	न
	पा	क	क	ला		मा	ह
हं	सु	ली		का	या		ला

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म .प्र .)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में निर्धारित कार्यों में आकस्मिक रूकावट आयेंगी, व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है, व्यय में वृद्धि होगी, मानसिक अशांति रहेगी, वर्ष के मध्य में शासन से लाभ प्राप्त होगा, व्यक्तित्व का विकास होगा, सामाजिककार्यों में ख्याति प्राप्त होगी, वर्ष के अन्त में भागदौड़ से सफ्लता प्राप्त होगी, आर्थिक कार्यों में लाभ प्राप्त होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यों में आकस्मिक रूकावट आयेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ विवाद होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ प्राप्त होगा, तथा व्यक्तिगत संबंधों में मनमुटाव हो सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा आदि से सतर्कता बांछनीय, सामाजिक कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंको प्रतिस्पर्धा में सफ्लता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों की आर्थिक उन्नति होगी, सफ्लता मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से शांत, गंभीर, तथा महत्वाकांक्षी, अपने कार्यो के प्रति सजग रहने वाला ईमानदार एवं क्रोधी होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, कला और साहित्य के क्षेत्र में अच्छी रूचि रहेगी, माता का भक्त होगा.

मेष- भय से छुटकारा मिलेगा, मित्रों से कहासुनी का दुख होगा, कामकाजी यात्रा का योग है, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मुलाकात होगी.

वृषभ- उच्च अध्ययन के अच्छे परिणाम आयेंगे, सुख सुविधा पर खर्च होगा, अनावश्यक कार्यो में धन खर्च होगा, आय में कमी हो सकती है.

मिथुन- तनाव दूर होगा, विपरीत परिस्थिति में समझौता करना पड़ सकता है, पराक्रम में वृद्धि होगी, नये कार्यो के प्रति रूचि रहेगी.

कर्क- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, जीवनसाथी के व्यवहार से दुख होगा, सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी, पदोन्नति का योग है.

सिंह- बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, जीवनसाथी के व्यवहार से दुख होगा, सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी, पदोन्नति का योग है.

कन्या- मित्रों की मदद से अधूरे कार्य पूरे होंगे, श्रम साध्य कार्यो में समय व्यतीत होगा, दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा.

तुला- व्यापारिक सौदेबाजी लाभकारी रहेगी, पारिवारिक आयोजन से प्रसन्नता होगी, पद प्रतिष्ठा रहेगी, यश मिलेगा. अनावश्यक विवाद न बढ़ाये.

वृश्चिक- प्रियजन की मुलाकात उपयोगी रहेगी, स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें, व्यर्थ के विवादों से दूर रहना हितकर रहेगा, खर्च की पूर्ति होगी.

धनु- दूसरों की बातों में आकर अपनों से दूरियां बना लेंगे, प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता के आसार हैं, शारीरिक सुख एवं पारिवारिक चिन्ता दूर होगी, यश मिलेगा.

मकर- उन्नति के लिये अवसर मिलेंगे.निजी मामलोंमें उत्साह बना रहेगा, किये गये प्रयासों की प्रशंसा होगी, सोचे हुये कार्य में गति आयेगी.

कुम्भ- झूठ बोलकर लोग भ्रमित कर सकते हैं, हक के लिये संघर्ष करना पडेगा, स्वास्थ्य में सुधार होगा, कुछ नये समाचारों की प्राप्ति होगी.

मीन- कोर्ट कचहरी के मामले सुलझेंगे, सामूहिक कार्यो में सबकी सहमति से कार्य करें, राजकीय कार्यो में सफ्लता मिलेगी, महत्वपूर्ण कार्यो की पूर्ति होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

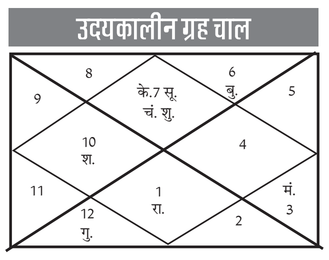

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी बुधवासरे दिन 8/54, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे रात 8/36, विष्कुम्भ योगे शाम 5/33, बालव करणे सू.उ. 5/24, सू.अ. 6/36, चन्द्रचार मीन, पर्व- अचला एकादशी व्रत, शु.रा. 12, 2, 3, 6, 7, 10 अ.रा. 1, 4, 5, 8, 9, 11 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, सरसों, तिल, तेल, मटर, अरंडी, रूई, सूत, कपास, आदि में तेजी होगी, नारियल, सुपारी, बादाम, दाख, छुहारा, के भाव में साधारण नरमी का रूख रहेगा, बारदाना के भाव में घट बढ़ रहेगी. भाग्यांक 4821 है.

SUDOKU 7388

7	8	6		1		5		2
	9			8				3
1			6	9		7		
	3	8	2		1			
2	7	5				6	3	1
			5		7	2	8	
		9		7	4			6
8				2			5	
4		2		5		9	1	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7387

2	9	5	3	1	4	6	8	7
3	6	1	2	8	7	4	9	5
8	4	7	5	9	6	3	2	1
5	7	4	1	6	2	8	3	9
1	3	6	9	4	8	5	7	2
9	8	2	7	3	5	1	4	6
6	2	8	4	7	1	9	5	3
4	5	3	6	2	9	7	1	8
7	1	9	8	5	3	2	6	4